तमिलनाडु-पोण्डिचेरी तट की तारली मात्स्यिकी- हाल की विदोहन प्रवणता और कुछ जैविक सूचनाएं

भारत के पूर्वी तट पर भारतीय तारली *सारडिनेल्ला लोंगिसेप्स* की उपस्थिति नियमित नहीं थी। पर आज यह जाति इस क्षेत्र के, विशेषतः आन्ध्राप्रदेश और तमिलनाडु-पोण्डिचेरी तट की मात्स्यिकी को बनाये रखने वाली नियमित एवं प्रमुख मात्स्यिकी बन गयी है। 1993-97 के दौरान पूर्वी तट से इस जाति का अवतरण पश्चिम तट के 46,000 टन के आगे 60,638 टन था जो पूर्वी तट के समुद्रवर्ती राज्यों में इन नयी संपदा की शक्यता व्यक्त करती है। आन्द्राप्रदेश में भी इस अवधि में 1988-92 के पिछले पंच वर्षीय अवधि की तुलना में तीन गुनी वृद्धि देखी गयी और तमिलनाटु में पकड दुगुनी होकर पूर्वी तट की कुल तारली पकड के 80% रिकार्ड की।

वर्तमान अध्ययन तमिलनाटू- पोण्डिचेरी तट पर इस मात्स्यिकी की आज की विदोहन प्रवणता पर सूचना देती है।

मात्स्यिकी प्रवणता

1991-97 की अवधि में पूर्वी तट से तारली उत्पादन कुल अखिल भारतीय उत्पादन के 45% था जिसमें लगभग 43,200 टन (80%) का वार्षिक औसत तमिलनाटू-पोण्डिचेरी तट से प्राप्त हुआ था जो कुल समुद्री मछली उत्पादन के 10% था। 1977 में पकड उच्च थी। 1973-77 से 1993-97 की अवधि की प्रत्येक पंच वर्षीय अवधि मात्स्यिकी की वृद्धि रिकार्ड करती है।

रिपोर्टर

पी.के. महादेवन पिल्लै, के. रमणी और वी. राधाकृष्णन नायर

केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोची
केरल

संभारवार पकड

तमिलनाटु और पोण्डिचेरी में उपयोग किये विभन्न मत्स्यन जालों में 47% का सबसे अधिक योगदान बैग जाल इडावले से प्राप्त हुआ। अब इसका प्रचालन चेंगलपेट से क्वेयद-मिल्लत जिलाओं और पोण्डिचेरी में सीमित है। इसके अलावा कावला वलै, तट्टा वलै (मत्ति वलै और चाला वलै) जैसे तारली गिल जालों का प्रयोग किया जिससे उत्पादन कुल तारली पकड का 25% था।

यह विचारणीय बात है कि कुल तारली उत्पादन का 23% आनायों से पकडा गया था। पाम्बान, रामेश्वरम और मंडपम में अनाय जोडियों के प्रचालन से लगभग 6500 टन का उच्चतम वार्षिक औसत पकड प्राप्त हुआ जो अनायों द्वारा प्राप्त कुल तारली पकड का 64.6% था।

तट संपाश और पोत संपाशों के सीमित प्रचालन से 5% अवतरण प्राप्त हुआ। मंडपम में प्रचालित तट संपाशों से तारली का असाधारण अवतरण हुआ तो टूटिकोरिन में तटसंपाशों से अवतरण केवल 2% था।

वर्तमान अध्ययन के अनुसार तमिलनाटु-पोण्डिचेरी तट में

तारली पकड़

इस संपदा की विदोहन प्रवणता इस प्रकार रही वार्षिक औसत 44,000 टन (40%) के साथ तारली उत्पादन में क्वयेद-मिल्लत आगे था। दूसरा स्थान साउथ आरकोट (19.8%) ने पाया और इसके बाद रामनाथपुरम (16%) पोंडिचेरी (9.2%), चेंगलपेट (6.2%), मद्रास (4.7%) और पुतुकोटाइ (2.2%) आते है। गिलजालों के ज़रिए प्राप्त कुछ सीमित पकड को छोडकर बाकी तटीय जिलाओं में पकड नगण्य थी।

मौसमी प्रवणता

1991-97 की अवधि के मौसमी मात्स्यिकी के विश्लेषण के अनुसार द्वितीय तिमाही (अप्रैल-जून) और तीसरी तिमाही (जुलाई-सितंबर) कुल पकड के क्रमशः 33% और 30% के साथ उत्पादकीय देखा गया। इसके पूर्व के अध्ययन भी मई और जून के दौरन मद्रास तट से उच्च अवतरण रिपोर्ट की है। विशाखपट्टणम तट पर तारलियों का मौसम जून -दिसंबर देखा जाता है और तमिलनाडु तट से भी 1985-90 के दौरान इसी प्रवणता रिपोर्ट की गयी है। वर्तमान अध्ययन का अप्रैल-सितंबर अवधि के उत्पादकीय मौसम तारली मात्स्यिकी का अनियमित मौसमिक उतार-चढाव का स्वभाव वैशिष्ट्य व्यक्त करता है।

उत्पादकीय मौसमों के दौरान प्रचालित बैग जाल और गिलजालों जैसे बडे जालों के ज़रिए 72 अवतरण रिकार्ड किया। आनाय जोडों के तीव्र प्रचालनों के फलस्वरूप आनायों में तारलियों की प्रचुरता जनवरी-मार्च की पहली तिमाही में देखी गयी। चिंगट आनायों में तारलियों की उपस्थिति असाधारण बात नहीं है, फिर भी आनाय जोडे ने 65% तारली अवतरण रिकार्ड किया। विशाखपट्टणम से प्रचालित चिंगट आनायों में जनवरी में वार्षिक आनाय पकड के 54% तक होकर तारलियों की उच्च पकड रिपोर्ट की और फरवरी में 16% यह व्यक्त करता है कि जनवरी-फरवरी और फरवरी-मार्च के दौरान तारलियाँ और अन्य तारलियैं गहरे जलक्षेत्र की ओर जाते है। इस अवधि के दौरान तटवर्ती क्षेत्रों में प्रचालित संभारों में तारली पकड नगण्य थी।

तट संपाशों और पोत संपाशों के ज़रिए चौथी तिमाही (अक्तूबर-दिसंबर) में तारलियों का उच्च अवतरण देख गया।

जैविक विशिष्टताएं

अभी तक प्राप्त सूचनाओं के अनुसार पूर्वी तट से पकडे गये तारलियों की कुल लंबाई 20 और 207 मि मी के रेंच में थी। अधिकांश केन्द्रों के मुख्य संभार आनाय होने के कारण 125 मि मी और ज्यादा लंबाई के तारलियाँ आनायों की मुख्य पकड थे। बैग जाल, तट संपाश आदि के ज़रिए प्राप्त मछलियाँ कम लंबाई की थी।

निरीक्षण से व्यक्त हुआ कि तारलियों का अंडजनन काल मई-जून से सितंबर-अक्तूबर तक की लंबी अवधि होता है। मद्रास तट मे मई-अगस्त के दौरान प्रौढ मछलियाँ देखी गयी और नवंबर के पोत संपाश पकड में 60-64 मि मी की छोटी मछलियाँ प्राप्त हुई थी। इस पर आगे किये गये निरीक्षण टूटिकोरिन में सितंबर, 1982, मई, 1983 और मार्च, 1984 में और परंगिपेट्टाई में जुलाई-सितंबर, 1986 के दौरान प्रौढ मछलियों की उपस्थिति रिकार्ड की। पोंडिचेरी में 1993 नवंबर-दिसंबर के दौरान पकडी गयी मछलियों में प्रथम और द्वितीय प्रैढावस्था प्राप्त जननग्रंथी थी। टूटिकोरिन में तारलियों का अंडजनन काल अक्तूबर-नवंबर देखा गया। विशाखपट्टणम तट की जाति का अडजनन काल बहुत लंबा देखा गया और दिसंबर-फरवरी, अप्रैल-जून और अगस्त-अक्तूबर के दौरान तीव्र अंडजनन हेते हुए देखा। यह देखा गया कि यह जाति 137 मि मी तक बढने पर प्रौढ बन जाती है और 3,6,9,12,15 महीने पूरे करने पर क्रमश 99.0, 139.5, 183.8 और 195.4 मि मी की लंबाई प्राप्त करती है।

आन्ध्राप्रदेश और तमिलनाडु-पोंडिचेरी तट की एक नियमित एवं प्रमुख मात्स्यिकी होने के कारण चुने गये केंद्रों पर इसके लंबाई वितरण और अंडजनन विशिष्टताओं पर एक विशेष अध्ययन अनिवार्य है कि इसकी गतिकी और आनेवाले सालों में इसकी उपलब्धि समझ सकें।

अभ्युक्तियाँ

तारली मात्स्यिकी जो पूर्वी तट की एक विरल संपदा मानी जाती थी, आज आन्ध्राप्रदेश और तमिलनाडु-पोंडिचेरी तट की प्रमुख मात्स्यिकी के रूप में उभर कर आयी है। वर्तमान अध्ययन

के आधार पर यह महसूस होता है कि बैग जाल इडा वले जिससे कुल तारली पकड के 47% रजिस्टर किया है, के प्रचालन तमिलनाडु के उन समुद्रवर्ती राज्यों में, जहाँ अभी तक इसका प्रचालन नहीं किया गया है, विस्तृत करने से उच्च पकड पाने की संभावना है।

रिपोर्ट के अनुसार स्थानीय माँग की कमी के कारण अधिकांश तारली पकड को बाहर बेच दिया। भारी अवतरण की अवधि में इसे सूर्यताप में सुखाकर कुकुट खाद्य निर्माण के लिए उपयोग किया।

तारली पकड भारत के पूर्वी तट में पत्तनों के निकट पश्च जल क्षेत्रों और नदी मुँह क्षेत्रों से प्राप्त होती है जो अलवणजल और नुनखरा जल के संयुक्त क्षेत्र है। अरब समुद्र के परिचालन के आधार पर और दक्षिण-पश्चिम मानसून के समय मई-अगस्त के दौरान ऊपरीतल प्रवाह के साथ दक्षिण-पश्चिमी तट से तारलियाँ बंगाल की खाडी में प्रवेश करने के कारण ये हमेशा ज्यारनदमुखों और पश्च जल क्षेत्रों में पाये जाते है। दिसंबर तक ये यहाँ रहते है और नवंबर-जनवरी में होनेवाले दक्षिणावर्त परिचालन में पडकर तट से अप्रत्यक्ष हो जाते है।

भारत की वाणिज्यिक प्रमुख वेलापवर्ती पखमछलियाँ

तारली (*सारडिनेला लौंगिसेप्स*)

श्वेत बेट (स्टोलेफोरस कर्मेसोनी)

फीता मीन (*लेप्ट्यूरोकान्थस सावला*)

बम्बिल (*हार्पोडोन नेहीरिअस*)

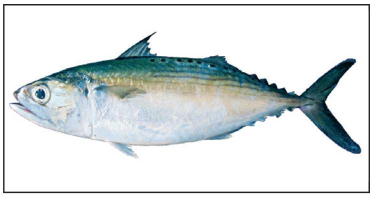

भारतीय बाँगडा (*रास्ट्रेल्लिगर कानागुर्टा*)

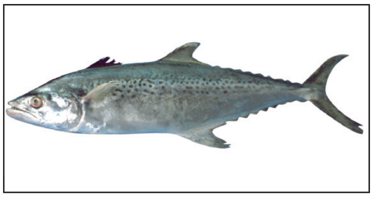

सुरमई (*स्कोमबरोमोरस गट्टाटस*)

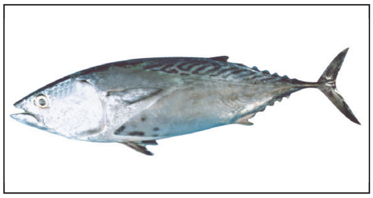

तटीय ट्यूना (*यूथिनस अफिनिस*)

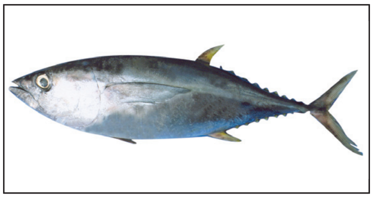

महासागरी ट्यूना पीतपख (*थन्नस आलबाकारस*)

महासागरी ट्यूना स्किपजैक (*काटसुओनस पेलामिस*)

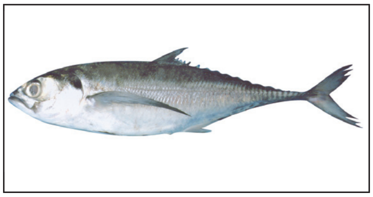

काट बाँगडा (*मेगालास्पिस कोर्डियाला*)

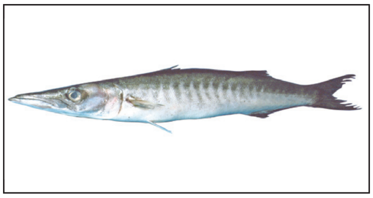

बैराकुडा (*स्फिरीना जेल्लो*)